आज़ादी के 75 साल

ISSN-2249-9318
Referred Research Journal
संयुक्तांक, जनवरी-दिसम्बर, 2021, वर्ष-17, अंक-17-18

# अनुसंधान

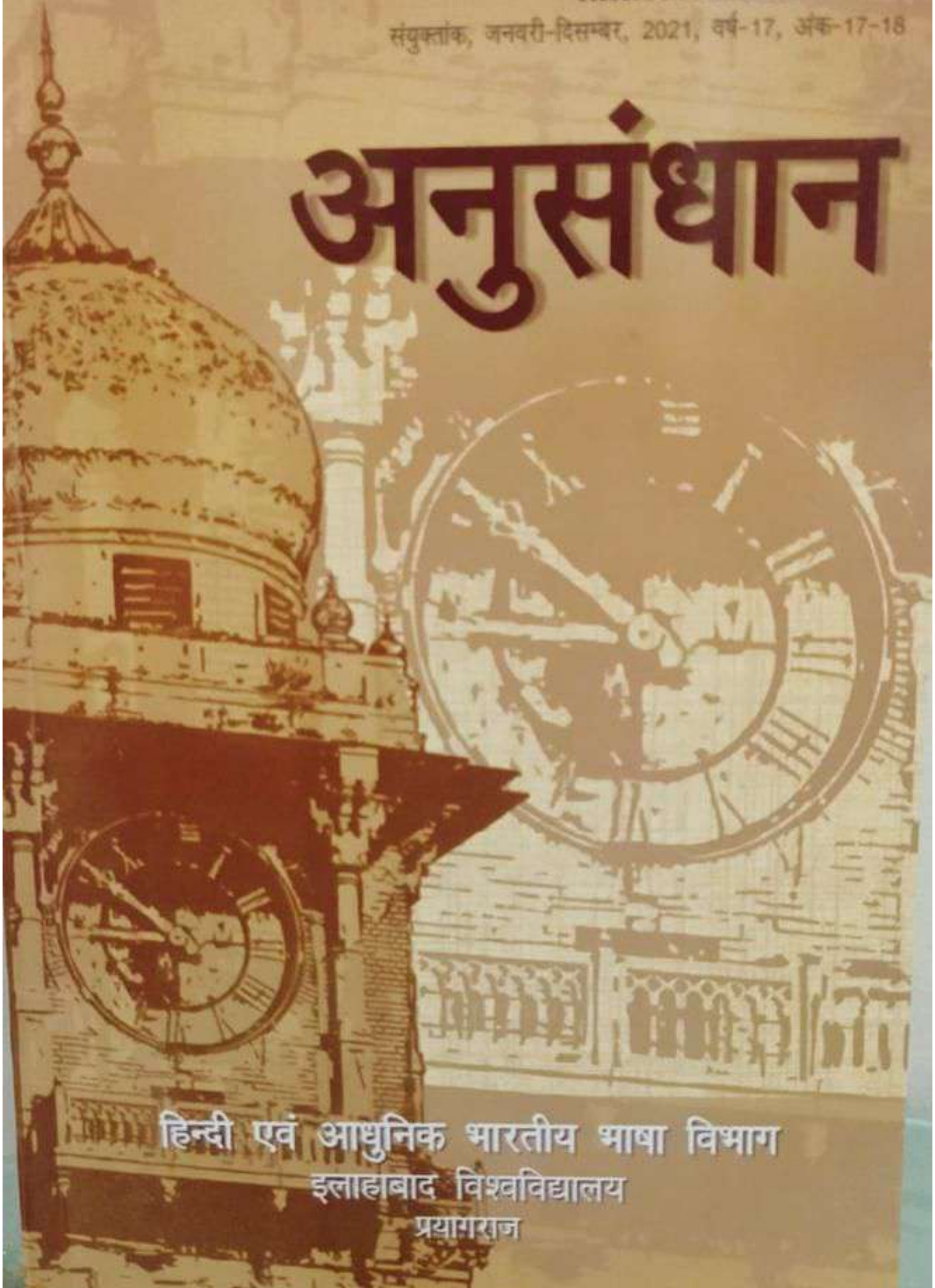

हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज

# अनुसंधान

Referred Research Journal

वर्ष 17, जनवरी-दिसम्बर, 2021 अंक-17-18 (संयुक्तांक)

संस्थापक अध्यक्ष
**प्रो. धीरेन्द्र वर्मा**

सम्पादन-परामर्श
**प्रो. प्रणय कृष्ण**

प्रधान-सम्पादक
**प्रो. सन्तोष भदौरिया**

सम्पादक मंडल
**बसन्त कुमार त्रिपाठी**
**बृजेश कुमार पांडेय**
**मीना कुमारी**
**राजू गाजुला**
**लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता**
**सन्तोष कुमार सिंह**

अनुसंधान समिति, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

'आजाद' से 'आंशिक आज़ाद' की तकलीफ़देह यात्रा
*कमलानन्द झा* 106

विकेन्द्रीकरण, संसाधन और ख़ुदमुख्तारी का विचार : महात्मा गांधी और वंचित जन
*रमाशंकर सिंह* 112

भारतीय राष्ट्रीय राज्य का बदलता स्वरूप
*स्मृति सुमन* 120

सत्ता के गलियारे में आज़ादी के मायने
*बृजेश कुमार पांडेय* 133

आदिवासी साहित्य गणतंत्र के आदिम राग का साहित्य है
*जनार्दन* 142

भाषायी अस्मिता, राष्ट्र और आदिवासी
*प्रभाकर सिंह* 149

आज़ादी के पचहत्तर वर्ष और हिन्दी कहानी की कहानी
*अनुराधा गुप्ता* 154

हिन्दी कहानी के 75 वर्ष और भारतीय किसान
*मोती लाल* 162

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : स्वरूप और प्रवृत्ति
*प्रीति सिंह* 168

आज़ादी के पश्चात महिला साहित्यकारों के कथा-संसार में स्त्री पात्र
*वन्दना* 177

नारी मुक्ति आन्दोलन : महिला उपन्यासकार संघर्ष के बीच मुक्ति के स्वर
*कुसुम त्रिपाठी* 182

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्यलेखन
*अमितेश कुमार* 196

ख़्वाजा अहमद अब्बास के सिनेमा का भारत
*अमरेन्द्र कुमार शर्मा* 201

काव्यभाषा की नई ज़मीन और नज़ीर अकबराबादी
*निवेदिता प्रसाद* 212

स्वातंत्र्य समर और कवि पंत
*सूर्यप्रसाद दीक्षित* 218

# स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : स्वरूप और प्रवृत्ति

**प्रीति सिंह**

हिन्दी के लिए उपन्यास शब्द नवीन नहीं है। यद्यपि उसका जो समकालीन स्वरूप है, वह बिलकुल नया है और अंग्रेज़ी के माध्यम से हिन्दी में आया है। उपन्यास उप और न्यास से मिलकर बना है। 'उप' का अर्थ 'समीप' और 'न्यास' का अर्थ 'रचना', जिसमें मानव-जीवन के किसी तत्व को उक्तिउक्त रूप में समन्वित कर समीप रखा जाए। इसमें मानव जीवन से सम्बन्धित सुखद एवं दुखद किन्तु मर्मस्पर्शी घटनाओं को निश्चित तारतम्यता के साथ चित्रित किया जाता है। इसे मानव-जीवन का यथार्थ प्रतिबिंब कहा जा सकता है। वस्तुत: उपन्यास में एक ऐसी विस्तृत कथा होती है, जो अपने भीतर अन्य गौण कथाएँ समेटे रहती है। इस कथा के भीतर समाज और व्यक्ति की विविध अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ, अनेक प्रकार के दृश्य और घटनाएँ एवं बहुत प्रकार के चरित्र हो सकते हैं और वह कथा विभिन्न शैलियों में कही जा सकती है। उपन्यास को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है। गणपति चन्द्रगुप्त के अनुसार 'उपन्यास गद्य का विकसित रूप है जिसमें कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद आदि के तत्त्वों के माध्यम से यथार्थ और कल्पना मिश्रित कहानी आकर्षण शैली में प्रस्तुत की जाती है।'[1]

मुंशी प्रेमचन्द कहते हैं कि मैं उपन्यास को मानव-जीवन का चित्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मुख्य स्वर है। हिन्दी उपन्यास आधुनिक युग की देन है। पश्चिम में उपन्यास की परम्परा का प्रारम्भ हिन्दी उपन्यासों से बहुत पहले हो चुका था। यही नहीं 18वीं सदी के मध्य भाग में जहाँ पश्चिमी उपन्यास का स्वरूप स्थिर हो रहा था, वहाँ 19वीं सदी में हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भ होता है। समाज और जनता दोनों के विचारों का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। साहित्य का स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ बहुत कुछ सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप बदलती जाती हैं। तभी कहा भी जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है।

रामचन्द्र शुक्ल भी लिखते हैं—'जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के रूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।'[2]

गद्य की सभी विधाओं के समान हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रारम्भ भी भारतेंदु युग से ही माना जाता है। उपन्यास का प्रथम चरण भारतेंदु युग एक प्रकार से नवजागरण का युग था। जीवन के विविध क्षेत्रों में इस समय अनेक प्रकार के क्रान्तिकारी आन्दोलन हो रहे थे। हिन्दी में उपन्यास रचना का प्रभाव अधिकांशत: बांग्ला और मराठी साहित्य के माध्यम से पड़ा। इस प्रकार हिन्दी उपन्यास साहित्य का आरम्भ बंगला और मराठी उपन्यासों के अनुवाद से हुआ। हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यासकार लाला श्रीनिवास दास को स्वीकार किया जाता है एवं मौलिक उपन्यास